#२७: सत्यता-३ : नियति ही व्यवस्था

दिनांक -१९/१०/२०११

व्यवस्था ही विकास, नियति ही व्यवस्था, विकास क्रम में चेतना विकास ही जागृति है | विकास का स्वरूप सहअस्तित्व में मात्रात्मक, गुणात्मक विधि से होना देखा गया है | परमाणु में गठन क्रिया सहज है | गठन क्रिया जब तक पूर्ण नहीं होता तब तक विकास क्रम, जो रासायनिक- भौतिक रूप में है, कार्य किये रहते हैं | गठनपूर्णता के अनंतर जीवन क्रिया है | जीवन स्वायत्त क्रिया है | गठनशीलता विधि से परमाणु, अणु, अणु रचनाएँ होते हैं | यही विकास क्रम में प्राण कोषा, प्राण कोषा से रचित रचना रूप में होते हैं | यही विकास क्रम का अग्रिम सीढी है | इस क्रम में जीवावस्था के शरीर और ज्ञानावस्था में मानव शरीर भी प्राण कोषा से रचित रचना है | इन सब बातों को देखने से नियति कितना विशाल, साधारण, स्वभावशील, सम्पूर्ण रूप में होने के रूप में अध्ययनगम्य है | यह बोध होने से व्यवस्था में जीने का स्वाभाविक रूप में प्रवृत्ति होता है | व्यवस्था में जीने का प्रवृत्ति ही भ्रममुक्ति, अपराधमुक्ति का अंतिम मंजिल है | इस क्रम में मानव ही प्रमाणित होता है |

मानव ज्ञानावस्था में होने के आधार पर अंतिम मंजिल हुआ | ज्ञानावस्था में होने का आधार सहअस्तित्व ही रहा | सहअस्तित्व नियति रूप में पहचानने में आता है | नियति का मतलब है नियम सहित अभिव्यक्ति, प्रमाणशील एवं प्रयोजनपूर्ण होना | अभिव्यक्ति के रूप में चारों अवस्थाएं प्रकट हैं | यह चारों अवस्थाएं पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था के रूप में पहचाना गया है | इस क्रम में ज्ञानावस्था स्वयं सह-अस्तित्व में, से, के लिये पहचानपूर्वक जीने की विधि है | इसे मानव भाषा में व्यवस्था कहा जाता है | हर अवस्था अपने स्वरूप में व्यवस्था में है ही | व्यवस्था का मूल रूप उपयोगिता पूरकता ही है | मानवेत्तर तीनों अवस्थाएं उपयोगिता- पूरकता पूर्वक वर्तमान होना अध्ययनगम्य है | यही मूल प्रेरणा है | मानव अपनी उपयोगिता- पूरकता प्रमाणित करने में असमर्थ है |

अभी तक मानव परिस्थिति के अनुसार अपनी उपयोगिता को प्रस्तुत किया, यही व्यक्तिवाद और समुदायवाद के रूप में प्रस्तुत हो गया है जो शिक्षा का आधार हुआ | जिस क्रम में मानव चलते आये उससे आज व्यापर को सर्वोपरी माना है | व्यापार स्वतंत्रता के लिये है | इस क्रम में युद्ध और संघर्ष दोनों प्रस्तुत हुआ | हर सम्प्रदाय इसी के लिये संघर्ष करता हुआ मिलता है | ये दोनों कृत्य मानव परम्परा में घर कर चुका है | मानव अपनी मर्यादा को व्यापर विधि से बनाना चाहा | यही भौतिकवाद का आजादी है | इसके लिये सुविधा संग्रह आवश्यक हो गया | जिसके लिये शोषण और युद्ध आवश्यक हो गया | इस प्रकार मानव का विवश होना समझ में आता है | यह अध्ययनगम्य हो चुका है | इस क्रम में मानव जात जो ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी के रूप में पहचाना जाता है- ये सभी सुविधा- संग्रह में लिप्त हैं | सुविधा- संग्रह सभी को चाहिए | अभी तक सुविधा-संग्रह किसी का पूरा नहीं हो पाया | इस ढंग से सोचने पर, यह कब पूरा होगा, ऐसी कल्पना आती है | इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि यह कभी पूरा नहीं होगा | सुविधा भी नयापन से जुड़ गया है | संग्रह संख्या से जुड़ गया है | नयापन का अंत नहीं होता | मानव प्रवृत्ति के अनुसार नयापन हर दिन उदय होता रहता है | संख्या का अंत होना सम्भव नहीं है | इस विधि से सुविधा-संग्रह का तृप्ति बिंदु सम्भव नहीं है | यह निष्कर्ष मानव ही तय कर पाता है न कि जीव-जानवर, पेड़-पौधे, मिट्टी- पत्थर | इसका निश्चय यदि मनुष्य को होता है तब विकल्प को खोजना होता है |

विकल्प रूप में समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व को प्रमाणित करने के अर्थ में चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रस्तावित है | इस प्रस्ताव में मानव समझदारी से समाधानपूर्वक जी पाता है | श्रम से समृद्धिपूर्वक जी पाता है | आचरण विधि से अर्थात उपयोगिता पूरकता विधि से अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सार्थक होना अध्ययनगम्य हो चुका है | अखण्डता विधि से मानव का विचार में स्वीकृतियां, धरती एक राष्ट्र रूप में, संपूर्ण मानव जाति एक रूप में, संपूर्ण मानव धर्म एक रूप में, अध्ययनगम्य है | इस क्रम में अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था एवं अखण्ड राष्ट्र होना स्वाभाविक है | अखण्ड राष्ट्र, अखण्ड समाज के अर्थ में है | अखण्ड राष्ट्र में अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था फलित होना समझा जा सकता है | इस प्रकार मानव समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्वपूर्वक जीना देखा गया है | अभयता वर्तमान में विश्वास ही है | वर्तमान में विश्वास तभी सम्भव है जब समाधान, समृद्धिपूर्वक सभी परिवार जी पाते हैं | सार्वभौम व्यवस्था १० सोपानीय विधि से अध्ययनगम्य हो चुकी है | इस क्रम में सभी मानव भ्रम एवं अपराध मुक्त होना सहज होता है | इसी क्रम में विकास एवं जागृति का ज्ञान सम्पन्नता सहित जीने का विधि स्पष्ट होती है | यही विकल्पात्मक अध्ययन का उपलब्धि है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याणहो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत